

## 1. परिचय

### बी0टी0सी0 (द्विवर्षीय पाठ्यक्रम) रूपरेखा

वर्तमान शैक्षिक आवश्यकताओं, अपेक्षाओं, बाल-मनोविज्ञान तथा बच्चों के सीखने-लिखने की प्रक्रिया एवं बालगत मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए प्रारम्भिक शिक्षा के शैक्षिक गुणवत्ता संवर्द्धन हेतु नवीन शिक्षण-विधियों, तकनीकों, शैक्षिक-नवाचारों एवं समसामयिक विषयवस्तु को द्विवर्षीय बी0टी0सी0 पाठ्यक्रम में समाविष्ट किया गया है।

### पाठ्यक्रम की रूपरेखा

बी0टी0सी0 द्विवर्षीय पाठ्यक्रम को चार सेमेस्टर में विभाजित किया गया है। प्रथम वर्ष में दो सेमेस्टर तथा द्वितीय वर्ष में दो सेमेस्टर होंगे। प्रत्येक सेमेस्टर 6 माह (न्यूनतम 120 शैक्षिक दिवस एवं 10 परीक्षा दिवसों) का होगा।

**सेमेस्टरवार विषय विभाजन सारिणी :** प्रत्येक सेमेस्टर के अन्तर्गत दो सैद्धान्तिक प्रश्न पत्र व विभिन्न विषयगत प्रश्नपत्र एवं एक माह का इण्टर्नशिप समाहित किया गया है। जिनका विवरण निम्नवत् है:-

| प्रथम सेमेस्टर                                                    | द्वितीय सेमेस्टर                                                  | तृतीय सेमेस्टर                                                    | चतुर्थ सेमेस्टर                                                      |
|-------------------------------------------------------------------|-------------------------------------------------------------------|-------------------------------------------------------------------|----------------------------------------------------------------------|
| <b>सैद्धान्तिक विषय</b>                                           |                                                                   |                                                                   |                                                                      |
| बाल विकास एवं सीखने की प्रक्रिया(edu 01)                          | वर्तमान भारतीय समाज एवं प्रारम्भिक शिक्षा (edu 03)                | शैक्षिक मूल्यांकन, क्रियात्मक शोध एवं नवाचार (edu 05)             | आरम्भिक स्तर पर भाषा के पठन/लेखन एवं गणितीय क्षमता का विकास (edu 07) |
| शिक्षण अधिगम के सिद्धान्त (edu 02)                                | प्रारम्भिक शिक्षा के नवीन प्रयास (edu 04)                         | समावेशी शिक्षा (edu 06)                                           | शैक्षिक प्रबन्धन एवं प्रशासन (edu 08)                                |
| <b>सामान्य विषय</b>                                               |                                                                   |                                                                   |                                                                      |
| विज्ञान                                                           | विज्ञान                                                           | विज्ञान                                                           | विज्ञान                                                              |
| गणित                                                              | गणित                                                              | गणित                                                              | गणित                                                                 |
| सामाजिक अध्ययन                                                    | सामाजिक अध्ययन                                                    | सामाजिक अध्ययन                                                    | सामाजिक अध्ययन                                                       |
| हिन्दी                                                            | हिन्दी                                                            | हिन्दी                                                            | हिन्दी                                                               |
| संस्कृत/उर्दू                                                     | अंग्रेजी                                                          | संस्कृत/उर्दू                                                     | अंग्रेजी                                                             |
| कम्प्यूटर शिक्षा                                                  | समाजोपयोगी उत्पादक कार्य                                          | कम्प्यूटर शिक्षा                                                  | शांति शिक्षा एवं सतत विकास                                           |
| कला/संगीत/शारीरिक शिक्षा/स्वास्थ्य शिक्षा (सैद्धान्तिक/प्रायोगिक) | कला/संगीत/शारीरिक शिक्षा/स्वास्थ्य शिक्षा (सैद्धान्तिक/प्रायोगिक) | कला/संगीत/शारीरिक शिक्षा/स्वास्थ्य शिक्षा (सैद्धान्तिक/प्रायोगिक) | कला/संगीत/शारीरिक शिक्षा/स्वास्थ्य शिक्षा (सैद्धान्तिक/प्रायोगिक)    |
| इण्टर्नशिप                                                        | इण्टर्नशिप                                                        | इण्टर्नशिप                                                        | इण्टर्नशिप                                                           |

कला/संगीत/शारीरिक शिक्षा/स्वास्थ्य में से किसी एक विषय का चयन प्रशिक्षु द्वारा प्रत्येक सेमेस्टर में किया जाएगा, जिसका मूल्यांकन विषयाध्यापक द्वारा ही किया जाएगा, इसी प्रकार समाजोपयोगी उत्पादक कार्य (एस0यू0पी0डब्लू0) विषय का भी मूल्यांकन मात्र विषय अध्यापक द्वारा ही किया जाएगा। इन विषयों की लिखित/वाह्य परीक्षा नहीं होगी।

### **बी0टी0सी0 द्विवर्षीय प्रशिक्षण हेतु पाठ्यसहगामी क्रियाकलापों की योजना**

प्रशिक्षणार्थियों के व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास में संज्ञानात्मक पक्ष के साथ-साथ संज्ञान सहगामी पक्ष का महत्वपूर्ण स्थान है। पाठ्यक्रम में निहित विषयों के द्वारा जहाँ ज्ञानात्मक योग्यता का विकास होता है वहीं पाठ्यसहगामी क्रियाकलापों के द्वारा उनके शारीरिक, सामाजिक, भावात्मक तथा कौशलात्मक पक्ष का विकास होता है। इसी तथ्य को दृष्टिगत रखते हुए बी0टी0सी0 प्रशिक्षण में भी इन क्रियाकलापों को समाविष्ट करने की आवश्यकता है ताकि प्रत्येक प्रशिक्षु इनमें भाग लेकर इन गतिविधियों में कुशलता प्राप्त करके विद्यालयों में प्रभावी व नियोजित तरीके से इनका आयोजन करा सके व बच्चों के सर्वांगीण विकास में अपना योगदान दे सकें।

प्रशिक्षण की सम्पूर्ण अवधि में प्रत्येक सेमेस्टर में निम्नलिखित पाठ्यसहगामी क्रियाकलापों का आयोजन नियमित रूप से समय-समय पर अनिवार्य रूप से कराया जाए—

#### **1. राष्ट्रीय एवं अन्तरराष्ट्रीय पर्वों/दिवसों का आयोजन**

- ❖ गणतंत्र दिवस— 26 जनवरी, स्वतंत्रता दिवस— 15 अगस्त, गाँधी जयन्ती— 2 अक्टूबर
- ❖ विश्व पर्यावरण दिवस— 5 जून, शिक्षक दिवस— 5 सितम्बर, मानवाधिकार दिवस— 10 दिसम्बर

#### **2. खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन—** राज्य स्तर, मण्डल स्तर तथा जनपद स्तर पर खेलकूद प्रतियोगिताओं का तथा सांस्कृतिक एवं साहित्यिक संध्या का आयोजन।

- ❖ कबड्डी, खो-खो, बैडमिंटन, बॉलीवाल, कैरम, शतरंज
- ❖ विभिन्न प्रकार की दौड़, लम्बी कूद
- ❖ भाला फेंक, चक्का फेंक, गोला फेंक

#### **3. साहित्यिक प्रतियोगिताओं का आयोजन**

- ❖ निबन्ध लेखन, सुलेख, प्रश्नमंच, वर्तमान के शैक्षिक मुद्दों/समस्या परिचर्चा/वाद-विवाद
- ❖ आशुभाषण/आशुलेखन
- ❖ काव्यगोष्ठी
- ❖ अन्त्याक्षरी (कविता, दोहे, चौपाई, छन्द आदि पर) आधारित सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता
- ❖ कविता/कहानी लेखन (स्वरचित), स्लोगन लेखन

#### **4. सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं का आयोजन**

- ❖ गायन प्रतियोगिता—देशगीत, समूह गीत, भजन, लोकगीत, क्षेत्रीय भाषाओं के गीत, गज़ल, कव्वाली।
- ❖ नृत्य प्रतियोगिता—एकल नृत्य, समूह नृत्य
- ❖ वादन प्रतियोगिता—तबला, बांसुरी, सितार, गिटार, ढोलक
- ❖ अभिनय प्रतियोगिता—नाटक, एकांकी, मूक अभिनय

#### **5. कलात्मक प्रतियोगिताओं का आयोजन**

- ❖ मेंहदी प्रतियोगिता, पुष्प सज्जा, रंगोली एवं अल्पना प्रतियोगिता।
- ❖ पेन्टिंग, पोस्टर/कोलाज निर्माण, आडियो/वीडियो क्लिप।

- ❖ अनुपयोगी वस्तुओं से कलात्मक व उपयोगी वस्तुओं का निर्माण।
  - ❖ कढ़ाई/बुनाई प्रतियोगिता, कलमदान, फूलदान, फोटोफ्रेम बनाना व साज-सज्जा।
  - ❖ मिट्टी/पीओपी के खिलौने का निर्माण।
6. संस्थान परिसर, प्राथमिक/उच्च प्राथमिक विद्यालयों में वृक्षारोपण तथा परिसर का सुन्दरीकरण।
  7. टीओएलएम मेले का आयोजन/विज्ञान-क्लब/पर्यावरण क्लब निर्माण व विज्ञान मेले का आयोजन।
  8. आईसीटी आधारित कक्षा-शिक्षण प्रतियोगिता।
  8. स्काउट/गाइड शिविर का आयोजन।
  9. शैक्षिक भ्रमण का आयोजन।

### तृतीय सेमेस्टर

| क्रम संख्या | विषय                                                                      | दिनों की संख्या | कालांश (न्यूनतम) | समूह चर्चा/प्रोजेक्ट कालांश (न्यूनतम) |
|-------------|---------------------------------------------------------------------------|-----------------|------------------|---------------------------------------|
| 1           | विज्ञान                                                                   | —               | 50               | 30                                    |
| 2           | गणित                                                                      | —               | 50               | 30                                    |
| 3           | सामाजिक अध्ययन                                                            | —               | 75               | 30                                    |
| 4           | हिन्दी                                                                    | —               | 45               | 15                                    |
| 5           | संस्कृत/उर्दू                                                             | —               | 45               | 15                                    |
| 6           | कम्प्यूटर शिक्षा                                                          | —               | 60               | 30                                    |
| 7           | शारीरिक शिक्षा एवं स्वास्थ्य/कला एवं संगीत                                | —               | 15               | 30                                    |
| 8           | शैक्षिक मूल्यांकन, क्रियात्मक शोध एवं नवाचार                              | —               | 75               | 15                                    |
| 9           | विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चों की शिक्षा निर्देशन, परामर्श (समावेशी शिक्षा) | —               | 75               | 15                                    |
| 10          | कक्षा शिक्षण/इण्टर्नशिप                                                   | 30              | —                | —                                     |
| 11          | परीक्षा                                                                   | 10              | —                | —                                     |
|             |                                                                           |                 | <b>योग—490</b>   | <b>योग—210</b>                        |

## शैक्षिक मूल्यांकन, क्रियात्मक शोध एवं नवाचार

### उद्देश्य

- प्रशिक्षु को मूल्यांकन की आवश्यकता एवं उद्देश्यों से अवगत कराना।
- प्रशिक्षु को विभिन्न प्रकार की मूल्यांकन विधाओं से अवगत कराना।
- बच्चों के सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन में प्रशिक्षित करना।
- कमजोर छात्रों की प्रगति हेतु निदानात्मक शिक्षण विधि के प्रयोग में प्रशिक्षित करना।
- प्राथमिक शिक्षा की समस्याओं के निराकरण करने हेतु क्रियात्मक शोध की जानकारी देना।
- शिक्षा में नवाचार की अवधारणा से परिचित कराना।
- सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन की अवधारणा एवं महत्व, मूल्यांकन के पक्ष, मूल्यांकन के प्रकार, उत्तम परीक्षण, मूल्यांकन की विशेषताएं, शिक्षण अधिगम और मूल्यांकन के सम्बन्ध में जानकारी प्रदान करना।
- प्रश्न पत्र निर्माण प्रक्रिया, मूल्यांकन का अभिलेखीकरण, निदानात्मक शिक्षण की जानकारी द्वारा प्रशिक्षुओं को शिक्षण कार्य में इनका प्रयोग करने में समर्थ बनाना।
- शिक्षण कार्य में क्रियात्मक शोध एवं शैक्षिक नवाचार करने हेतु प्रोत्साहित करना।

### प्रशिक्षण प्रक्रिया/विधियाँ

प्रशिक्षुओं के मध्य विषयवस्तु को अधिकतर प्रयोग की जा सकने वाली शिक्षण विधियों के माध्यम से रखने का प्रयास किया जाए। प्रशिक्षण शैक्षिक गतिविधियों पर आधारित हो। प्रशिक्षण के समय सीखने एवं सिखाने की प्रक्रिया में प्रशिक्षुओं को सहभागी बनाया जाए। साथ ही, उन्हें अपने शिक्षण में बच्चों का सहयोग एवं उनकी सहभागिता सुनिश्चित करनी है, यह बताया जाए। यथासम्भव आई0सी0टी0 के माध्यम से विषयवस्तु को प्रस्तुत करने का भी प्रयास किया जाए।

प्रशिक्षण के दौरान प्रशिक्षु का निर्धारित प्रारूप पर सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन किया जाए, जिससे कि वह इस प्रक्रिया से परिचित हो जाए तथा इसकी प्रयोग-विधि सीख सकें।

## सैद्धान्तिक विषय—edu 05

### शैक्षिक मूल्यांकन, क्रियात्मक शोध एवं नवाचार

#### कक्षा शिक्षण: विषयवस्तु

#### 1. मापन एवं मूल्यांकन

- शैक्षिक मापन एवं मूल्यांकन की अवधारणा।
  - शैक्षिक मापन का अर्थ
  - मूल्यांकन की संकल्पना
  - मूल्यांकन के उद्देश्य
  - मूल्यांकन के क्षेत्र
- मूल्यांकन की आवश्यकता एवं महत्व।
  - मूल्यांकन की प्रशासनिक आवश्यकता
  - मूल्यांकन की शैक्षिक आवश्यकता
  - मूल्यांकन की शैक्षिक अनुसंधान में आवश्यकता
  - सामाजिक दृष्टिकोण से मूल्यांकन की आवश्यकता
- मापन एवं मूल्यांकन में अन्तर।
  - परीक्षण एवं मापन में अन्तर
- सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन की अवधारणा एवं महत्व।
  - दक्षता आधारित मूल्यांकन
  - व्यापक मूल्यांकन
  - सतत् मूल्यांकन एवं महत्व
  - सतत् मूल्यांकन की कार्य-प्रणाली एवं सोपान
  - सतत् मूल्यांकन का क्षेत्र।
  - सतत् मूल्यांकन की कार्य-प्रणाली एवं सोपान
- मूल्यांकन के पक्ष।
 

|                                                                     |                                                                                        |
|---------------------------------------------------------------------|----------------------------------------------------------------------------------------|
| → संज्ञानात्मक (Cognitive)                                          | ज्ञान, बोध, अनुप्रयोग या व्यवहारिकता, विश्लेषण, संश्लेषण एवं मूल्यांकन।                |
| → भावात्मक (affective)                                              | ग्रहण करना या ध्यान देना, अनुक्रिया करना, मूल्य आंकना, संगठन, मूल्य द्वारा विशिष्टीकरण |
| → कौशलात्मक (Conative) एवं व्यवहारात्मक (Behavior overall activity) | सामाजिक कौशल<br>यान्त्रिक कौशल<br>गणितीय कौशल<br>भाषायी कौशल                           |

- उत्तेजना
- क्रियान्वयन
- नियंत्रण।
- समायोजन
- स्वाभावीकरण

- मूल्यांकन के प्रकार—
  - ➔ मौखिक परीक्षा
  - ➔ लिखित परीक्षा
  - ➔ साक्षात्कार/निरीक्षण/अवलोकन/प्रायोगिक
  - ➔ रचनात्मक मूल्यांकन (Formulative Evaluation)
  - ➔ आंकलित मूल्यांकन (Summative Evaluation)
- उत्तम परीक्षण/मूल्यांकन की विशेषताएं, शिक्षण अधिगम और मूल्यांकन का संबंध।
- प्रश्न-पत्र निर्माण प्रक्रिया
  - ➔ योजना निर्माण, ब्लूप्रिन्ट, सम्पादन तथा अंक निर्धारण।
  - ➔ प्रश्नों के प्रकार (वस्तुनिष्ठ, अतिलघुउत्तरीय, लघुउत्तरीय, दीर्घउत्तरीय)
  - ➔ शैक्षिक उद्देश्यों के अनुसार प्रश्नों के पक्ष (ज्ञान, बोध, अनुप्रयोग, कौशल)
- मूल्यांकन अभिलेखीकरण (संज्ञानात्मक तथा संज्ञान सहगामी पक्ष) सतत, मासिक, अर्द्धवार्षिक एवं वार्षिक मूल्यांकन, पुनर्बलन।
- निदानात्मक परीक्षण एवं उपचारात्मक शिक्षण।
- क्रियात्मक शोध।
  - शोध का अर्थ, प्रकार, उद्देश्य, आवश्यकता एवं महत्व।
  - क्रियात्मक शोध के क्षेत्र।
  - क्रियात्मक शोध के चरण एवं प्रारूप निर्माण।
  - क्रियात्मक शोध उपकरण निर्माण।
  - क्रियात्मक शोध का सम्पादन/अभिलेखीकरण।
- शैक्षिक नवाचार
  - शिक्षा में नवाचार का अर्थ, आवश्यकता एवं महत्व।
  - शैक्षिक नवाचार के क्षेत्र (शिक्षण अधिगम के सुधार हेतु स्थानीय समुदाय/परिवेश के संसाधनों की पहचान और उनका उपयोग कर मूल्यांकन, प्रार्थना स्थल की गतिविधि, पाठ्य सहगामी, क्रियाकलाप, सामुदायिक सहभागिता, विद्यालय प्रबंधन, विषयगत कक्षा-शिक्षण समसामयिक दृष्टान्त, लैबएरिया।

प्रयोगात्मक कार्य/सत्रीय/प्रोजेक्ट कार्य/मॉडल: प्रशिक्षु शिक्षकों को शैक्षिक मूल्यांकन, क्रियात्मक शोध एवं नवाचार के प्रत्येक पाठ में अन्तर्निहित ज्ञान, संकल्पना को बच्चों तक पहुँचाने के लिए प्रोजेक्ट, मॉडल, Game, Video clip, Audio clip, Experiment तैयार करने का कार्य दिया जायेगा। तैयार किये जा सकने वाले मॉडल/प्रोजेक्ट की सांकेतिक सूची सहायतार्थ निम्नवत् है। शिक्षकगण अन्य विषयों पर भी मॉडल/प्रोजेक्ट का निर्धारण कर सकते हैं।

- प्रोजेक्ट कार्य के रूप में प्रत्येक प्रशिक्षणार्थी द्वारा कम से कम दस बच्चों को चिन्हित कर इन्टर्नशिप के दौरान उनके व्यवहार में सकारात्मक परिवर्तन लाने का प्रयास करना और आए हुए परिवर्तन का मूल्यांकन करना।
- प्रत्येक प्रशिक्षु दो शैक्षिक समस्याओं को चिन्हित कर उसका समाधान क्रियात्मक शोध अध्ययन के अनुसार आख्या सहित प्रस्तुत करें।
- मूल्यांकन एवं शिक्षण-अधिगम को मॉडल/चार्ट में प्रस्तुत करना।
- मूल्यांकन को प्रभावित करने वाले कारकों पर चार्ट/मॉडल तैयार करना।
- मापन एवं मूल्यांकन, परीक्षण एवं मापन में अन्तर स्पष्ट करने के लिए सामग्री/मॉडल/चार्ट तैयार करना।

## समावेशी शिक्षा एवं विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चों की शिक्षा, निर्देशन एवं परामर्श

### उद्देश्य

- प्रशिक्षुओं में समावेशी शिक्षा की समझ विकसित करना।
- समावेशी शिक्षा के प्रकार, प्रकृति एवं विविधा की जानकारी देना।
- विभिन्न प्रकार के बच्चों की शैक्षिक/भाषायी/प्राकृतिक समस्याओं से परिचित कराना।
- प्रशिक्षु को समस्त प्रकार के बच्चों की शिक्षा की मुख्य धारा से जोड़ने, उनकी झिझक समाप्त करने में प्रशिक्षित करना।
- विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चों की शिक्षण की विधाओं, संचार माध्यमों का प्रयोग एवं मूल्यांकन की विधियों से परिचित होकर कक्षा शिक्षण में उनका प्रयोग कर सकने में सक्षम बनाना।
- निर्देशन एवं परामर्श का अर्थ, महत्व एवं प्रक्रिया से अवगत करना।
- परामर्श में सहयोग देने वाले विभाग/संस्थाओं से परिचित करना।
- विशिष्ट बच्चों को शिक्षा से जोड़ने की सामग्री/आई0सी0टी0 पर आधारित सामग्री/गेम के प्रयोग में प्रशिक्षित करना।

### प्रशिक्षण प्रक्रिया/विधियाँ

प्रशिक्षुओं के मध्य विषयवस्तु को अधिकतर प्रयोग की जा सकने वाली शिक्षण विधियों के माध्यम से रखने का प्रयास किया जाए। प्रशिक्षण शैक्षिक गतिविधियों पर आधारित हो। प्रशिक्षण के समय सीखने एवं सिखाने की प्रक्रिया में प्रशिक्षुओं को सहभागी बनाया जाए। साथ ही, उन्हें अपने शिक्षण में बच्चों का सहयोग एवं उनकी सहभागिता सुनिश्चित करनी है, यह बताया जाए। यथासम्भव आई0सी0टी0 के माध्यम से विषयवस्तु को प्रस्तुत करने का भी प्रयास किया जाए।

प्रशिक्षण के दौरान प्रशिक्षु का निर्धारित प्रारूप पर सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन किया जाए, जिससे कि वह इस प्रक्रिया से परिचित हो जाए तथा इसकी प्रयोग-विधि सीख सकें।

## सैद्धान्तिक विषय—edu 06

### समावेशी शिक्षा एवं विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चों की शिक्षा, निर्देशन एवं परामर्श

#### कक्षा शिक्षण: विषयवस्तु

#### 1. खण्ड 'अ' — विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चे

- शैक्षिक समावेशन से अभिप्राय, पहचान, प्रकार, निराकरण। यथा: अपवंचित वर्ग, भाषा, धर्म, जाति, क्षेत्र, वर्ण, लिंग, शारीरिक दक्षता (दृष्टिबाधित, श्रवणबाधित एवं वाक्/अस्थिबाधित), मानसिक दक्षता।
- समावेशन के लिए आवश्यक उपकरण, सामग्री, विधियाँ, टी0एल0एम0 एवं अभिवृत्तियाँ (attitude)।
- समावेशित बच्चों का अधिगम जाँचने हेतु आवश्यक टूल्स एवं तकनीकी
- समावेशित बच्चों के लिए विशेष शिक्षण विधियाँ। यथा—ब्रेललिपि आदि।

#### 2. खण्ड 'ब' — निर्देशन एवं परामर्श

- समावेशी बच्चों हेतु निर्देशन एवं परामर्श : अर्थ, उद्देश्य, प्रकार, विधियाँ, आवश्यकता एवं क्षेत्र (scope)
- परामर्श में सहयोग देने वाले विभाग/संस्थाएँ
  - मनोविज्ञानशाला, उ0प्र0, इलाहाबाद
  - मण्डलीय मनोविज्ञान केन्द्र (मण्डल स्तर पर)
  - जिला चिकित्सालय
  - जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान में प्रशिक्षित डायट मेण्टर
  - पर्यवेक्षण एवं निरीक्षण तन्त्र
  - समुदाय एवं विद्यालय की सहयोगी समितियाँ
  - सरकारी एवं गैर सरकारी संगठन
- बाल-अधिगम में निर्देशन एवं परामर्श का महत्व

**प्रयोगात्मक कार्य/सत्रीय/प्रोजेक्ट कार्य/मॉडल:** प्रशिक्षु शिक्षकों को समावेशी शिक्षा एवं विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चों की शिक्षा, निर्देशन एवं परामर्श के प्रत्येक पाठ में अन्तर्निहित ज्ञान, संकल्पना को बच्चों तक पहुँचाने के लिए प्रोजेक्ट, मॉडल, Game, Video clip, Audio clip, Experiment तैयार करने का कार्य दिया जायेगा। तैयार किये जा सकने वाले मॉडल/प्रोजेक्ट की सांकेतिक सूची सहायतार्थ निम्नवत् है। शिक्षकगण अन्य विषयों पर भी मॉडल/प्रोजेक्ट का निर्धारण कर सकते हैं।

- अपने आस-पास के समावेशित बच्चों की समस्या पता करके उनकी सूची बनाइए।
- विभिन्न प्रकार के समावेशित बच्चों की प्रकृति को चार्ट/मॉडल द्वारा प्रस्तुत करना।
- विभिन्न प्रकार के समावेशन पर एक चार्ट/मॉडल तैयार करना।
- विभिन्न प्रकार के कैलिपर्स का एलबम बनाना।
- कम बोलने वाले बच्चों के लिए ऑडियो/वीडियो क्लिप तैयार करना।

# विज्ञान

## उद्देश्य

- वैज्ञानिक सोच, क्या, क्यों, कैसे,..... को विकसित करना। रू रू
- विज्ञान की विषयवस्तु की समझ विकसित करना।
- प्रशिक्षु को विषयवस्तु परिवेश में उपलब्ध संसाधनों/सामग्रियों के माध्यम से प्रस्तुत करने में प्रशिक्षित करना।
- प्रशिक्षु को दैनिक जीवन की गतिविधियों, घटनाओं के माध्यम से वैज्ञानिक संकल्पनाओं को प्रस्तुत करने में सक्षम बनाना।
- विज्ञान की विषयवस्तु को रुचिकर तरीके से प्रस्तुत करने में प्रशिक्षित करना।
- प्रशिक्षु से विषयवस्तु से सम्बन्धित टी0एल0एम0/प्रयोग तैयार कराना।
- प्रशिक्षु को विभिन्न एजुकेशनल सॉफ्टवेयर/गेम/प्रयोगों के माध्यम से विषयवस्तु को प्रस्तुत करने में प्रशिक्षित करना।
- सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (आई0सी0टी0) के माध्यम से कठिन संकल्पनाओं को सरल तरीके से प्रस्तुत करने में प्रशिक्षु को प्रशिक्षित करना।
- प्रशिक्षु को विज्ञान की विभिन्न विषयवस्तुओं के सतत् मूल्यांकन प्रक्रिया में प्रशिक्षित करना।
- विज्ञान शिक्षण में विभिन्न प्रकरणों की वैज्ञानिक विधियों (पैडागॉजी) को अपनाये जाने का कौशल विकसित करना।

## प्रशिक्षण प्रक्रिया/विधियाँ

प्रशिक्षुओं के मध्य विषयवस्तु को अधिकतर सभी प्रयोग की जा सकने वाली शिक्षण विधियों के माध्यम से रखने का प्रयास किया जाए। प्रशिक्षण, शैक्षिक गतिविधियों पर आधारित हो। प्रशिक्षण के समय सीखने एवं सिखाने की प्रक्रिया में प्रशिक्षुओं को सहभागी बनाया जाए, साथ ही उन्हें अपने शिक्षण में बच्चों का सहयोग एवं उनकी सहभागिता सुनिश्चित करनी है, बताया जाए। यथासम्भव आई0सी0टी0 के माध्यम से विषयवस्तु को प्रस्तुत करने का भी प्रयास किया जाए।

प्रशिक्षण के दौरान प्रशिक्षु का निर्धारित प्रारूप पर सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन किया जाए, जिससे कि वह इस प्रक्रिया से परिचित हो जाए तथा इसकी प्रयोग विधि सीख सके।

**नोट-विज्ञान शिक्षण से सम्बन्धित विषयवस्तु के कक्षा-शिक्षण से पूर्व एवं पश्चात् विभिन्न शिक्षण विधाओं जैसे-प्रयोग विधि, प्रयोग-प्रदर्शन विधि, परिवेशीय भ्रमण विधि, प्रेक्षण विधि, सूक्ष्मावलोकन, वर्गीकरण, विचार-विमर्श, समस्या-समाधान विधि, अन्वेषणात्मक विधि, संग्रह-विधि, समूह-चर्चा विधि एवं प्रश्नोत्तर-विधि पर व्यापक चर्चा की जाए।**

### सामान्य विषय-3

## विज्ञान

### कक्षा-शिक्षण: विषयवस्तु

- दैनिक जीवन में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी (परिवहन, चिकित्सा, जनसंचार, मनोरंजन, उद्योग, कृषि, मत्स्य पालन, कुक्कुट पालन, आधुनिक ईंधन, दूरस्थ शिक्षा)। मानव समाज को विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी से लाभ व हानियां।
- दाब तथा वैज्ञानिक यंत्र।
- जीव जन्तुओं के वाह्य एवं आंतरिक अंगों के कार्यों में विविधता।
- सूक्ष्म जीवों की दुनिया-संरचना तथा उपयोगिता, सूक्ष्म जीव-दोस्त या दुश्मन। भोज्य पदार्थों का परिरक्षण।
- प्राकृतिक सम्पदा का संरक्षण एवं ब्रह्माण्ड जीवों का विलुप्तीकरण।
- कार्बन एवं उसके यौगिक।
- असंक्रामक रोग/अनियमित जीवन शैली से उत्पन्न रोग (मधुमेह, उच्च रक्तचाप, दिल की बीमारियां) कारण, निदान व उपचार।
- पर्यावरण और प्राकृतिक संसाधन, जलीय पौधों एवं जानवरों का प्राकृतिक वास, मरुद्भिद पौधों एवं जानवरों का प्राकृतिक वास। पर्यावरण असंतुलन में मानव का हस्तक्षेप, वन्य जीव जन्तुओं का संरक्षण कार्यक्रम, ग्रीन हाउस गैसीय प्रभाव, ओजोन-क्षरण, धरती का बढ़ता तापमान।
- ऊष्मा, प्रकाश एवं ध्वनि :- ऊष्मा का मापन, संचरण व संवहन। प्रकाश : स्रोत एवं संचरण, प्रकाश का परावर्तन व अपवर्तन, गोलीय, अवतल व उत्तल दर्पण द्वारा प्रतिबिम्ब का बनना। ध्वनि : संचरण, आवृत्ति व आवर्तकाल।

**प्रयोगात्मक कार्य/सत्रीय/प्रोजेक्ट कार्य/मॉडल:** विज्ञान के प्रत्येक पाठ से प्रशिक्षु शिक्षकों को उस पाठ में अन्तर्निहित ज्ञान, संकल्पना को बच्चों तक पहुँचाने के लिये एक प्रोजेक्ट, मॉडल, Game, Video clip, Audio clip, Experiment तैयार करने का कार्य दिया जायेगा। तैयार किये जा सकने वाले मॉडल/प्रोजेक्ट की सांकेतिक सूची सहायतार्थ निम्नवत् है। शिक्षकगण अन्य विषयों पर भी मॉडल/प्रोजेक्ट का निर्धारण कर सकते हैं।

- दाब एवं बल की संकल्पना को स्पष्ट करने हेतु मॉडल/प्रोजेक्ट/खेल/टी0एल0एम0 तैयार करें।
- विभिन्न प्रकार के रोगों एवं कारणों को चार्ट/मॉडल से प्रदर्शित करें।
- ऊष्मा के संवहन पर मॉडल/प्रोजेक्ट/टी0एल0एम0 तैयार करें।
- ध्वनि एवं उसकी विभिन्न विशिष्टताओं को स्पष्ट करने हेतु मॉडल/प्रोजेक्ट/टी0एल0एम0 तैयार करें।
- कुछ पुष्पों के परागकणों की सूक्ष्मदर्शीय संरचना का अध्ययन।
- स्वनिर्मित वैज्ञानिक उपकरणों द्वारा वैज्ञानिक घटनाओं का मॉडल तैयार करना, जैसे-टार्च का मॉडल।
- संतुलित आहार का चार्ट/मॉडल बनाना।

- सूक्ष्म जीवों की स्लाइड बनाकर अध्ययन करना। जैसे—दही के जीवाणु।
- शहर के पार्क तथा गोंवों में जाकर पौधों का अध्ययन किया जाना, उन पर प्रोजेक्ट तैयार करना।
- औषधीय पौधों की विशिष्टताएँ स्पष्ट करने हेतु चार्ट/मॉडल तैयार करें।
- गतिविधि जैसे: एक गिलास को छेड़ो, दूसरा संगीत उत्पन्न करें। भाप से चलने वाला झूला। चित्र दिखे या न भी दिखे। गरम करते ही लिखावट उभर आये। सिंह की दहाड़ डिब्बे में आदि तैयार करें।

# गणित

## उद्देश्य

- प्रशिक्षु को गणित में प्रयुक्त होने वाले गणितीय शब्दों, गणितीय संक्रियाओं तथा चिह्नों के मध्य सम्बन्धों की समझ विकसित करना।
- गणित की विषयवस्तु की जानकारी एवं उसकी अवधारणा की समझ विकसित करना।
- गणित की विषयवस्तु को परिवेश में उपलब्ध संसाधनों/सामग्रियों/बच्चों की गतिविधियों के माध्यम से प्रस्तुत करने में प्रशिक्षित करना।
- गणित की विषयवस्तु की उपयोगिता और आवश्यकता को रुचिकर तरीके से प्रस्तुत करने में प्रशिक्षित करना।
- प्रशिक्षु से विषयवस्तु से सम्बन्धित टी0एल0एम0/गतिविधि/कम्प्यूटर गेम/पज़ल तैयार कराना।
- प्रशिक्षु को विभिन्न एजुकेशनल सॉफ्टवेयर/गेम/गतिविधि के माध्यम से विषयवस्तु को प्रस्तुत करने में प्रशिक्षित करना।
- गणित की विषयवस्तु के शिक्षण में प्रयुक्त गणित सीखने-सिखाने के विज्ञान (Pedagogy) एवं गणित शिक्षण के सैद्धान्तिक पक्ष (Methodology) से परिचित कराना।
- गणित सीखने-सिखाने के क्रम (ELPs) की प्रशिक्षुओं में समझ विकसित करते हुए उसकी उपयोगिता एवं प्रासंगिता स्पष्ट करना।
- गणित शिक्षण में शैक्षिक तकनीक की उपयोगिता स्पष्ट करते हुए उसके उपयोग में दक्ष करना।
- कम्प्यूटर के माध्यम से गणित की क्रियाओं को करने में प्रशिक्षु को प्रशिक्षित करना।
- प्रशिक्षु को गणित की विषयवस्तुओं के सतत् मूल्यांकन करने हेतु प्रशिक्षित करना।

## प्रशिक्षण प्रक्रिया/विधियाँ

प्रशिक्षुओं के मध्य विषयवस्तु को अधिकतर प्रयोग की जा सकने वाली शिक्षण विधियों के माध्यम से रखने का प्रयास किया जाए। प्रशिक्षण शैक्षिक गतिविधियों पर आधारित हो। प्रशिक्षण के समय सीखने एवं सिखाने की प्रक्रिया में प्रशिक्षुओं को सहभागी बनाया जाए। साथ ही, उन्हें अपने शिक्षण में बच्चों का सहयोग एवं उनकी सहभागिता सुनिश्चित करनी है, यह बताया जाए। यथासम्भव आई0सी0टी0 के माध्यम से विषयवस्तु को प्रस्तुत करने का भी प्रयास किया जाए।

प्रशिक्षण के दौरान प्रशिक्षु का निर्धारित प्रारूप पर सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन किया जाए, जिससे कि वह इस प्रक्रिया से परिचित हो जाए तथा इसकी प्रयोग-विधि सीख सकें।

सामान्य विषय-3

गणित

कक्षा-शिक्षण: विषयवस्तु

- अनुपात, समानुपात, अनुलोम एवं प्रतिलोम समानुपात का अर्थ।
- समानुपाती राशियों में बाह्य पदों एवं मध्य पदों के गुणनफल में सम्बन्ध।
- घातांक की अवधारणा।
- पूर्णांक तथा परिमेय संख्याओं को (धनात्मक आधार पर) घातांक रूप में लिखना।
- सरल व चक्रवृद्धि ब्याज की संकल्पना।
- सरल ब्याज, सूत्र तथा चक्रवृद्धि मिश्रधन का सूत्र एवं अनुप्रयोग।
- बैंक की जानकारी, बैंक में खाता खोलना तथा खातों के प्रकार।
- लघुगुणक की जानकारी, घातांक से लघुगुणक तथा इसका विलोम।
- शेयर, लाभांश।
- समुच्चय की संकल्पना, लिखने की विधियाँ, समुच्चय के प्रकार (सीमित, असीमित, एकल, रिक्त), समुच्चयों का संघ, अन्तर तथा सर्वनिष्ठ समुच्चय ज्ञात करना।
- चर राशियों का गुणनखण्ड, दो वर्गों के अन्तर के रूप के व्यंजकों का गुणनखण्ड, द्विघातीय त्रिपदीय व्यंजकों का गुणनखण्ड।
- बीजगणितीय व्यंजकों में एकपदीय तथा द्विपदीय व्यंजकों से भाग।
- अवर्गीकृत आंकड़ों के माध्य।
- आयतन एवं धारिता की संकल्पना तथा इकाइयाँ।
- घन, घनाभ की अवधारणा तथा इनका आयतन एवं सम्पूर्ण पृष्ठ।
- वृत्तखण्ड एवं त्रिज्या खण्ड की अवधारणा।
- वृत्त खण्ड का कोण
- वृत्त के चाप द्वारा वृत्त के केन्द्र तथा परिधि पर बने कोणों का सम्बोध एवं इनका परस्परिक सम्बन्ध।
- वृत्त की छेदक रेखा, स्पर्श रेखा तथा स्पर्श बिन्दु की अवधारणा।
- वृत्त पर दिये हुये बिन्दु से स्पर्श रेखा खींचना।

**प्रयोगात्मक कार्य/सत्रीय/प्रोजेक्ट कार्य/मॉडल:** प्रशिक्षु शिक्षकों को गणित के प्रत्येक पाठ में अन्तर्निहित ज्ञान, संकल्पना को बच्चों तक पहुँचाने के लिए प्रोजेक्ट, मॉडल, Game, Video clip, Audio clip, Experiment तैयार करने का कार्य दिया जायेगा। तैयार किये जा सकने वाले मॉडल/प्रोजेक्ट की सांकेतिक सूची सहायतार्थ निम्नवत् है। शिक्षकगण अन्य विषयों पर भी मॉडल/प्रोजेक्ट का निर्धारण कर सकते हैं।

- गणितीय मनोरंजन के कोई पाँच खेल-सामग्री का निर्माण करना।
- अनुपात, समानुपात, अनुलोम एवं प्रतिलोम समानुपात के अर्थ को समझाने हेतु मॉडल/सामग्री विकसित करना।

- समानुपाती राशियों में बाह्य पदों एवं मध्य पदों के गुणनफल को स्पष्ट करने हेतु सामग्री बनाना।
- घातांक की अवधारणा को स्पष्ट करने हेतु उदाहरण एवं सामग्री निर्मित करना।
- सरल व चक्रवृद्धि ब्याज, मिश्रधन की संकल्पना को स्पष्ट करने हेतु खेल/मॉडल/प्रोजेक्ट/सामग्री बनाना।
- बैंकों की जानकारी, बैंक में खाता खोलना आदि के लिए खेल/मॉडल/प्रोजेक्ट/सामग्री बनाना।
- शेयर, लाभांश पर खेल/मॉडल/प्रोजेक्ट/सामग्री बनाना।
- समुच्चय की संकल्पना, समुच्चय के प्रकार, समुच्चयों का संघ आदि स्पष्ट करने के लिए खेल/मॉडल/प्रोजेक्ट/सामग्री बनाना।
- चर राशियों के गुणनखण्ड की संकल्पना को स्पष्ट करने हेतु खेल/मॉडल/प्रोजेक्ट/सामग्री बनाना।
- अवर्गीकृत आंकड़ों के माध्य/बारम्बारता/माध्यिका को स्पष्ट करने हेतु खेल/मॉडल/प्रोजेक्ट/सामग्री बनाना।
- घन, घनाभ की अवधारणा तथा इनका आयतन एवं सम्पूर्ण पृष्ठ को स्पष्ट करने हेतु खेल/मॉडल/प्रोजेक्ट/सामग्री बनाना।
- वृत्तखण्ड, स्पर्श रेखा, चाप, त्रिज्या आदि की अवधारणा को स्पष्ट करने हेतु खेल/मॉडल/प्रोजेक्ट/सामग्री बनाना।

## सामाजिक अध्ययन

### उद्देश्य

- प्रशिक्षुओं में सामाजिक विज्ञान की विषयवस्तु की संज्ञानात्मक समझ विकसित करना एवं विषयवस्तु की समीक्षा एवं समालोचना करने में सक्षम बनाना।
- प्रासंगिक स्थानीय स्मारकों/संग्रहालयों/पर्यटन स्थल आदि को, विषयवस्तु को सीखने-सिखाने की प्रक्रिया का हिस्सा बनाना।
- सामाजिक अध्ययन में शिक्षण की विधाओं, संचार माध्यमों का प्रयोग एवं मूल्यांकन की विधियों से परिचित होकर कक्षा-शिक्षण में उनके उपयोग हेतु सक्षम बनाना।
- प्रशिक्षु को दैनिक जीवन की गतिविधियों, घटनाओं के माध्यम से सामाजिक अध्ययन की विषयवस्तु को प्रस्तुत करने में सक्षम बनाना।
- सामाजिक अध्ययन की विषयवस्तु को चार्ट/मानचित्र/सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) के माध्यम से रुचिकर तरीके से प्रस्तुत करने में प्रशिक्षित करना।
- प्रशिक्षु से विषयवस्तु से सम्बन्धित सामग्रियाँ/मॉडल तैयार कराना।
- प्रशिक्षु को विभिन्न एजुकेशनल सॉफ्टवेयर/गेम/प्रयोगों के माध्यम से विषयवस्तु को प्रस्तुत करने में प्रशिक्षित करना।
- प्रशिक्षु को सामाजिक अध्ययन की विभिन्न विषयवस्तुओं के सतत् मूल्यांकन प्रक्रिया में प्रशिक्षित करना।
- सामाजिक अध्ययन के विषयवस्तु को शिक्षार्थी केन्द्रित शिक्षण विधियों जैसे अभिनय, समूह-चर्चा, पैनल-चर्चा, वाद-विवाद, समस्या समाधान, भ्रमण, प्रोजेक्ट विधि आदि के उपयोग हेतु सक्षम बनाना।

### प्रशिक्षण प्रक्रिया/विधियाँ

प्रशिक्षुओं के मध्य विषयवस्तु को अधिकतर प्रयोग की जा सकने वाली शिक्षण विधियों के माध्यम से रखने का प्रयास किया जाए। प्रशिक्षण शैक्षिक गतिविधियों पर आधारित हो। प्रशिक्षण के समय सीखने एवं सिखाने की प्रक्रिया में प्रशिक्षुओं को सहभागी बनाया जाए। साथ ही, उन्हें अपने शिक्षण में बच्चों का सहयोग एवं उनकी सहभागिता सुनिश्चित करनी है, यह बताया जाए। यथासम्भव आईसीटी के माध्यम से विषयवस्तु को प्रस्तुत करने का भी प्रयास किया जाए।

प्रशिक्षण के दौरान प्रशिक्षु का निर्धारित प्रारूप पर सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन किया जाए, जिससे कि वह इस प्रक्रिया से परिचित हो जाए तथा इसकी प्रयोग-विधि सीख सकें।

**सामान्य विषय-3**

**सामाजिक अध्ययन**

**कक्षा-शिक्षण: विषयवस्तु**

- भारत में मुगल साम्राज्य—बाबर, हुमायूँ व उसकी स्वदेश को पुनः वापसी—शेरशाह का उदय, अकबर, जहाँगीर, औरंगजेब व मुगल साम्राज्य का पतन।
- मुगलों का प्रशासनिक सामाजिक, सांस्कृतिक, कलात्मक एवं आर्थिक क्षेत्र में योगदान।
- मराठा शक्ति का अभ्युदय—शिवाजी, अठ्ठारहवीं शताब्दी में भारत की स्थिति।
- भारत में यूरोपीय शक्तियों का प्रवेश एवं ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना, पुर्तगाली, डच, अंग्रेज, फ्रांसीसी।
- भारत की सत्ता के लिए यूरोपीय शक्तियों में संघर्ष—प्रथम, द्वितीय व तृतीय कर्नाटक युद्ध, डूप्ले की नीति, प्लासी का युद्ध, बक्सर का युद्ध, इलाहाबाद की संधि।
- भारत में अंग्रेजी साम्राज्य की स्थापना—राबर्ट क्लाइव, वारेन हेस्टिंग्स, लार्ड कार्नवालिस, लार्ड वेलेजली, लार्ड विलियम बेंटिक, लार्ड डलहौजी।
- जीव मण्डल—प्राकृतिक प्रदेश एवं जनजीवन (शीत कटिबन्धीय प्रदेश, उष्ण कटिबन्धीय प्रदेश, शीतोष्ण कटिबन्धीय प्रदेश, जलवायु, वनस्पति, जीवजन्तु, मानव जीवन), उद्योग धंधे।
- भूखण्डों का विभाजन—एशिया, यूरोप, उत्तरी अमेरिका, दक्षिणी अमेरिका, अफ्रीका, आस्ट्रेलिया तथा अंटार्कटिका—सामान्य परिचय, जनसंख्या का विस्तार एवं घटक।
- विश्व में—प्राकृतिक संसाधन, यातायात तथा संचार के साधन, खनिज सम्पदा।
- मनुष्य की आवश्यकता तथा उसकी पूर्ति हेतु प्रयत्न की दिशा में प्राकृतिक सम्पदा का उपयोग एवं संरक्षण।
- हमारा भारत—प्राकृतिक एवं राजनैतिक इकाईयां, हमारी प्राकृतिक सम्पदा और उनका सदुपयोग।
- हमारी खनिज सम्पदा, शक्ति के साधन, कृषि और सिंचाई, आयात—निर्यात।
- सरकार के अंग—शक्ति का पृथक्करण, शक्तियों का बंटवारा—केन्द्र सूची, राज्य सूची, समवर्ती सूची के प्रमुख विषय।
- संसद—
  - लोकसभा—सदस्यों की योग्यताएं, कार्यकाल, पदाधिकारी, अधिवेशन व कार्य।
  - राज्यसभा—सदस्यों की योग्यताएं, कार्यकाल, पदाधिकारी, अधिवेशन व कार्य।
  - राष्ट्रपति—चुनाव, कार्यकाल, महाभियोग, शक्तियाँ, मंत्रिमंडल।
  - कानून बनाने की प्रक्रिया—साधारण बहुमत, विशेष बहुमत।
- कार्यपालिका—प्रधानमंत्री व मंत्रिपरिषद—चुनाव कार्य, संसद का मंत्रिपरिषद पर नियंत्रण।
- न्यायपालिका—न्यायालय के प्रकार—
  - जनपद स्तरीय न्यायालय
  - उच्च न्यायालय
  - उच्चतम न्यायालय
- न्यायाधीशों की योग्यताएं, कार्यकाल

- उच्चतम न्यायालय के अधिकार
- लोक अदालत
- जनहित वाद
- भारतीय वित्त व्यवस्था व बजट—कर व उसके प्रकार, केन्द्र व राज्यों के मध्य करों का बँटवारा, केन्द्र सरकार की आय—व्यय के स्रोत, राज्य सरकार की आय—व्यय की मदें, सरकार द्वारा शिक्षा के दृष्टिकोण से बजट—2013—14 में रखे गये बिन्दु।
- पंचवर्षीय योजनाएं—क्या, पिछली 11वीं पंचवर्षीय योजनाओं के मुख्य बिन्दु, वर्तमान में 12 वीं पंचवर्षीय योजना—विशेषकर शिक्षा के दृष्टिकोण से।
- भारतीय आधुनिक बैंकिंग व्यवस्था—बैंक व उनके प्रकार भारतय रिजर्व बैंक, स्टेट बैंक, भूमि विकास बैंक, क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक, नाबार्ड, ई—बैंकिंग, बैंको का राष्ट्रीयकरण व निजीकरण, आधुनिक अर्थव्यवस्था में बैंको का महत्व।

**प्रयोगात्मक कार्य/सत्रीय/प्रोजेक्ट कार्य/मॉडल:** प्रशिक्षु शिक्षकों को सामाजिक अध्ययन के प्रत्येक पाठ में अन्तर्निहित ज्ञान, संकल्पना को बच्चों तक पहुँचाने के लिए प्रोजेक्ट, मॉडल, Game, Video clip, Audio clip, Experiment तैयार करने का कार्य दिया जायेगा। तैयार किये जा सकने वाले मॉडल/प्रोजेक्ट की सांकेतिक सूची सहायतार्थ निम्नवत् है। शिक्षकगण अन्य विषयों पर भी मॉडल/प्रोजेक्ट का निर्धारण कर सकते हैं।

- सल्तनत एवं मुगल स्थापत्य कला की तुलनात्मक स्थिति स्पष्ट करने हेतु मॉडल/चार्ट तैयार करें।
- ग्राँण्ड ट्रंक रोड, कृषि, खनिज, प्रमुख सड़क मार्ग, प्रमुख रेलमार्ग, प्रमुख जलमार्ग को मानचित्र/मॉडल में दर्शाएँ।
- यूरोपीय शक्तियों के आगमन के फलस्वरूप हुए व्यापारिक मार्गों की खोज व विभिन्न आविष्कारों पर एक लेख लिखें।
- भारत में अंग्रेजों के काल में हुए सुधार व विकास कार्यों पर एक समालोचनात्मक टिप्पणी लिखिए।
- ग्लोब एवं विश्व के प्राकृतिक प्रदेशों को मॉडल/मानचित्र पर दर्शाएँ।
- विश्व के मानचित्र पर विकसित देश, विकासशील देश (प्रमुख) देशों को दर्शाएँ।
- केन्द्र सूची, राज्य सूची व समवर्ती सूची पर एक चार्ट तैयार करें।
- केन्द्र व राज्य सरकार की आय व्यय के स्रोत को चार्ट द्वारा प्रदर्शित करें।
- मुगल साम्राज्य सभी शासकों का काल क्रमानुसार फोटो एलबम बनाएं।
- मुगल काल से लेकर अंग्रेजों के आगमन तक हुए प्रमुख युद्धों पर एक रिपोर्ट तैयार करें।
- वर्तमान की डाक व्यवस्था व शेरशाह की डाक व्यवस्था में भिन्नता पर रिपोर्ट तैयार करें।
- भारत के सभी राष्ट्रपतियों के नामों व कार्यकाल को सूचीबद्ध करते हुए फोटो एलबम बनायें।
- पिछले दस वर्षों की साक्षरता स्थिति पर एक पॉवर प्वाइंट प्रजेंटेशन तैयार करें।
- किसी राष्ट्रीयकृत बैंक/निजी बैंक का भ्रमण कर उसमें चल रही बैंकिंग योजनाओं पर रिपोर्ट तैयार कीजिए।

# हिन्दी

## उद्देश्य

- मनुष्य के जीवन में भाषा की भूमिका को समझाना।
- प्रशिक्षुओं को बच्चों के भाषा सीखने की प्रक्रिया से अवगत कराना एवं इस प्रक्रिया के विभिन्न स्तरों को स्पष्ट करना।
- विषयवस्तु से सम्बन्धित शिक्षण-सामग्री तैयार करने के लिए प्रशिक्षित करना। हिन्दी भाषा की विषयवस्तु की समझ विकसित करना।
- हिन्दी भाषा की विषयवस्तु में प्रयोग की गयी सामग्री को बच्चों द्वारा परिवेश से एकत्रित कराने एवं दिये गये भावों को बच्चों से प्रस्तुत कराकर उनकी विषय-वस्तु में रुचि उत्पन्न कराने में प्रशिक्षित करना।
- प्रशिक्षुओं को बच्चों को पढ़ने, लिखने एवं समझने के लिए प्रेरित करने हेतु कहानियाँ/ कविता बनाने एवं प्रस्तुत करने में प्रशिक्षित करना।
- प्रशिक्षुओं को संचार प्रौद्योगिकी एवं अन्य शिक्षण विधाओं के माध्यम से बच्चों के पठन कौशल विकास (शुद्ध उच्चारण) के लिए प्रशिक्षित करना।
- प्रशिक्षु को भाषा शिक्षण का सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन कराने में प्रशिक्षित करना।

## प्रशिक्षण प्रक्रिया/विधियाँ

प्रशिक्षुओं के मध्य विषयवस्तु को अधिकतर प्रयोग की जा सकने वाली शिक्षण विधियों के माध्यम से रखने का प्रयास किया जाए। प्रशिक्षण, शैक्षिक गतिविधियों पर आधारित हो। कक्षा में कहानी का उपयोग सिखायें। प्रशिक्षण के समय सीखने एवं सिखाने की प्रक्रिया में प्रशिक्षुओं को सहभागी बनाया जाए, साथ ही उन्हें अपने शिक्षण में बच्चों का सहयोग एवं उनकी सहभागिता सुनिश्चित करनी है, बताया जाए। यथासम्भव सूचना तकनीक/कम्प्यूटर के माध्यम से विषयवस्तु को प्रस्तुत करने का भी प्रयास किया जाए।

प्रशिक्षण के दौरान प्रशिक्षु का निर्धारित प्रारूप पर सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन किया जाए, जिससे कि वह इस प्रक्रिया से परिचित हो जाए तथा इसकी प्रयोग विधि सीख सके।

सामान्य विषय-3

हिन्दी

कक्षा-शिक्षण: विषयवस्तु

- पाठ्यपुस्तक में आये प्रमुख कवियों और लेखकों का सामान्य परिचय।
- श्रुत सामग्री में प्रयुक्त शब्दों, मुहावरों, लोकोक्तियों का प्रसंगानुकूल प्रयोग।
- राष्ट्रीय पर्वों, मेला, त्योहार जैसे विषयों पर अपने शब्दों में गद्य अथवा पद्य में स्वतंत्र लेखन।
- कर्ता कर्म के अनुसार क्रिया में परिवर्तन, तत्सम, तद्भव देशज रूपों का परिचय, सरल संयुक्त व मिश्रित वाक्य, वाक्यांश के लिए एक शब्द का प्रयोग।
- पाठ्यपुस्तक के अतिरिक्त अन्य पाठ्यवस्तु को पढ़कर समझना।
- औपचारिक एवं अनौपचारिक परिस्थितियों के अनुरूप उपयुक्त भाषा का प्रयोग करना।
- अधिगम प्रतिफल का मूल्यांकन, शिक्षण प्रक्रिया एवं बच्चों के क्रियाकलापों के साथ, प्रथम दो कक्षाओं में मौलिक और प्रेक्षात्मक मूल्यांकन। तथा कक्षा-3 से आगे की कक्षाओं में अन्य तकनीकों के पूरकरूप में लिखित परीक्षा का संचालन।

प्रयोगात्मक कार्य/सत्रीय/प्रोजेक्ट कार्य/मॉडल: प्रशिक्षु शिक्षकों को हिन्दी के प्रत्येक पाठ में अन्तर्निहित ज्ञान, जानकारी एवं घटनाओं के अन्तः सम्बन्धों को बच्चों तक पहुँचाने के लिए प्रोजेक्ट, मॉडल, खेल, गतिविधि, दृश्य-श्रव्य(वीडियो/आडियो), सामग्री, प्रयोग तैयार करने का कार्य दिया जायेगा। तैयार किये जा सकने वाले मॉडल/प्रोजेक्ट की सांकेतिक सूची सहायतार्थ निम्नवत् है। शिक्षकगण अन्य विषयों पर भी मॉडल/प्रोजेक्ट का निर्धारण कर सकते हैं।

- आत्मकथा एवं यात्रा वृत्तान्त का मौलिक लेखन।
- विभिन्न विराम चिन्हों वाले अनुच्छेदों का निर्माण।
- मुहावरों एवं लोकोक्तियों के बीच अन्तर स्पष्ट करने की सामग्री।
- शब्दों की उत्पत्ति पर मॉडल/प्रोजेक्ट।
- एक ही विषय पर लिखी गयी कविताओं के कवियों का संग्रह तैयार करना।
- समाचार-पत्रों, पत्रिकाओं से कक्षा शिक्षण के लिये उपयोगी सामग्री का संकलन तैयार करना।

# संस्कृत

## उद्देश्य

- प्रशिक्षुओं को बच्चों के संस्कृत भाषा सीखने की प्रक्रिया से अवगत कराना एवं प्रक्रिया के विभिन्न स्तरों को स्पष्ट करना।
- विषयवस्तु से सम्बन्धित टी0एल0एम0 तैयार करने में प्रशिक्षित करना। संस्कृत की विषयवस्तु की समझ विकसित करना।
- संज्ञा, लिंग एवं वचन के माध्यम से बच्चों में शुद्ध उच्चारण एवं लेखन के कौशल का विकास करेंगे।
- शब्द व धातु रूप का ज्ञान कराते हुए उनके प्रयोग का कौशल विकसित करेंगे।
- संस्कृत भाषा के महत्व से परिचित होकर बच्चों में उच्चारण, वाचन, लेखन की दक्षता के विकास हेतु ऑडियो/वीडियो/आई0सी0टी0 का प्रयोग करना सिखाना।
- प्रशिक्षु को भाषा का सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन करने में प्रशिक्षित करना।
- धातु रूप का ज्ञान कराते हुए उनके प्रयोग का कौशल विकसित करेंगे।
- संस्कृत भाषा के महत्व से परिचित होकर बच्चों में उच्चारण, वाचन, लेखन की दक्षता के विकास हेतु ऑडियो/वीडियो/आई0सी0टी0 का प्रयोग करना।
- प्रशिक्षु को भाषा का सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन करने में प्रशिक्षित करना।
- संस्कृत ध्वनियों के उच्चारण स्थान से अवगत कराना एवं उनका शुद्ध उच्चारण हेतु प्रेरित करना।
- संस्कृत गद्यों, श्लोकों एवं लघु कहानियों के माध्यम से छात्रों में राष्ट्रीय प्रेम, पर्यावरण संरक्षण तथा लैंगिक समानता जैसे मानवीय मूल्यों को विकसित करना।
- बच्चों में सरल हिन्दी वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद करने का कौशल विकसित करना।
- संस्कृत भाषा के महत्व से अवगत होकर बच्चों में संस्कृत के प्रति रुचि उत्तपन्न करना।
- संस्कृत भाषा के संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, विशेषण आदि के प्रयोग से दक्षता विकसित करना।

## प्रशिक्षण प्रक्रिया/विधियाँ

प्रशिक्षुओं के मध्य विषयवस्तु को अधिकतर प्रयोग की जा सकने वाली शिक्षण विधियों के माध्यम से रखने का प्रयास किया जाए। प्रशिक्षण शैक्षिक गतिविधियों पर आधारित हो। प्रशिक्षण के समय सीखने एवं सिखाने की प्रक्रिया में प्रशिक्षुओं को सहभागी बनाया जाए। साथ ही, उन्हें अपने शिक्षण में बच्चों का सहयोग एवं उनकी सहभागिता सुनिश्चित करनी है, यह बताया जाए। यथासम्भव आई0सी0टी0 के माध्यम से विषयवस्तु को प्रस्तुत करने का भी प्रयास किया जाए।

प्रशिक्षण के दौरान प्रशिक्षु का निर्धारित प्रारूप पर सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन किया जाए, जिससे कि वह इस प्रक्रिया से परिचित हो जाए तथा इसकी प्रयोग-विधि सीख सकें।

सामान्य विषय-3

संस्कृत

कक्षा शिक्षण: विषयवस्तु

- संस्कृत वर्णपरिचय व उनके ध्वनि उच्चारण स्थान का ज्ञान।
- सन्धि प्रकरण – प्रकार, सूत्र, नियम निर्देश सहित सन्धि विग्रह एवं सन्धि करने का ज्ञान।
- समास प्रकरण – अव्ययीभाव, तत्पुरुष, कर्मधारय, द्विगु, बहुब्रीहि व द्वन्द्व समास का ज्ञान।
- शब्द रूप – शब्द प्रकार, वचन व विभक्तियों का ज्ञान।
- धातुरूप – लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् व लृटलकार का पुरुष व वचन सहित ज्ञान।
- कारक विभक्ति एवं चिह्न का ज्ञान।
- सुभाषित श्लोकों का सस्वर पाठ व अनुकरण वाचन।
- पाठ्यपुस्तक के अंशों का सुलेख, अनुलेख, श्रुतलेख एवं सरल अनुवाद।
- संवाद पाठों पर आधारित संस्कृत में छोटे-छोटे वाक्यों की रचना करने का ज्ञान।
- हिन्दी वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद।
- उपसर्ग, प्रत्यय एवं वाच्य परिवर्तन का ज्ञान।
- एक से पचास तक संस्कृत संख्याओं का ज्ञान।
- संभाव्य शिक्षण विधाएँ – शिक्षक प्रशिक्षण में क्रियाकलाप आधारित शिक्षण-अधिगम का ज्ञान, मॉडल, गेम, वीडियो क्लिप, ऑडियो क्लिप, प्रयोग तैयार करके, श्यामपट्ट कार्य के द्वारा, शब्द पट्टिका, चार्ट, कठिन शब्दों के चार्ट व उच्चारणाभ्यास के के द्वारा अभिनय व प्रश्नोत्तर, प्रशिक्षक-शिक्षक सहभागिता आदि के द्वारा प्रभावी शिक्षण के सम्भव है।

प्रयोगात्मक कार्य/सत्रीय/प्रोजेक्ट कार्य/मॉडल: प्रशिक्षु शिक्षकों को संस्कृत के प्रत्येक पाठ में अन्तर्निहित ज्ञान, संकल्पना को बच्चों तक पहुँचाने के लिए प्रोजेक्ट, मॉडल, Game, Video clip, Audio clip, Experiment तैयार करने का कार्य दिया जायेगा। तैयार किये जा सकने वाले मॉडल/प्रोजेक्ट की सांकेतिक सूची सहायतार्थ निम्नवत् है। शिक्षकगण अन्य विषयों पर भी मॉडल/प्रोजेक्ट का निर्धारण कर सकते हैं।

- संस्कृत विषय की कठिनाईयों से सम्बन्धित एक क्रियात्मक शोध।
- स्वनिर्मित शिक्षण अधिगम सामग्री का निर्माण व प्रयोग।
- संस्कृत में निबन्ध/पत्र लेखन।
- संस्कृत में वाद-विवाद प्रतियोगिता तथा अभिलेखीकरण।
- विभिन्न संस्कृत ग्रन्थों/कृतियों/रचनाकारों पर चार्ट/प्रस्तुतीकरण तैयार करना।

## ऊर्दू

### مرحلہ ( سوم )

#### مقصد

- \* اردو زبان کی اہمیت سے واقفیت حاصل کر کے بچوں میں دلچسپی پیدا کرنا ۔
- \* اردو زبان سے متعلق صلاحیتوں (سننا، بولنا، پڑھنا، لکھنا) میں خود مہارت حاصل کرنا اور بچوں کو بھی اس سے واقف کرانا ۔
- \* اردو زبان کے طریقہ تعلیم اس کے محاسبہ اور تجزیہ کے طریقوں سے متعارف ہونا ۔

#### نظریاتی حصہ

- \* اردو زبان کی اہمیت ۔
- \* ہندوستانی تہذیب کی ترقی و نشوونما میں اردو زبان کی خدمات ۔
- \* قومی و انسانی قدروں کی ترقی میں اردو زبان کی خدمات ۔
- مندرجہ ذیل عنوانات سے متعلق درجہ میں تدریس اور تجزیہ

- \* اردو ادب کی تاریخ
- \* تدریس نثر - مقصد و اہمیت - تدریس نثر کی مشق - کہانی و ڈراموں کے اسباق پر خاص توجہ دینے کی ضرورت ۔
- \* تدریس نظم - مقصد و اہمیت - طلباء کو اوزان والے اشعار اور آزاد نظم سے متعارف کرانا اور ان میں شعر فہمی کا شعور بڑھانا ۔
- \* زبانی لیاقت میں اضافہ کرنا - تقریر - مکالمہ - بحث و مباحثہ - بیت بازی اور شاعرے کا اہتمام کرنا ۔

### مرحلہ وار افعال

- \* مضمون نویسی - خطوط نویسی - کہانی مجموعہ - محاوروں کا جملوں میں استعمال
- \* ۱ سے ۱۰۰ تک اعداد کا علم
- \* اردو نثر، نظم و تدریس قواعد کے (پرائمری/ایئر پرائمری سطح) منصوبہ سبق تیار کرنا ۔

# कम्प्यूटर शिक्षा

## उद्देश्य

- कम्प्यूटर का परिचय, इतिहास, विकास व उसके प्रकार की जानकारी देना।
- कम्प्यूटर का प्रयोग, कार्यक्षेत्र, लाभ, सीमायें और कम्प्यूटर की कार्य प्रणाली से प्रशिक्षु को परिचित कराना।
- हार्डवेयर, सॉफ्टवेयर एवं उनकी कार्य प्रणाली, सॉफ्टवेयर एप्लीकेशन की कार्यप्रणाली, मल्टीमीडिया का परिचय एवं उसके प्रयोग से सम्बन्धित जानकारी देना।
- मल्टीमीडिया और इन्टरनेट को कक्षा-कक्ष शिक्षण में प्रभावी रूप से प्रयोग करने हेतु प्रशिक्षित करना।
- विश्व में हो रहे शैक्षिक अनुसंधान/नवाचारों में कम्प्यूटर की उपयोगिता एवं प्रासंगिकता से प्रशिक्षुओं को अवगत कराना एवं इंटरनेट पर सामग्री खोजने की विधि बताना।
- कम्प्यूटर की सहायता से आंकड़ों को सुरक्षित रखना, गणितीय अभिक्रियाएँ करना एवं विभिन्न प्रकार के खेलों के माध्यम से शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति कराना।
- प्रौद्योगिकी पर आधारित गतिविधियों के माध्यम से विषयवस्तु एवं जीवन कौशल की जानकारी देना।
- कक्षा-शिक्षण को प्रभावी एवं रोचक बनाने हेतु कम्प्यूटर गेम/वीडियो क्लिप आदि के प्रयोग करने में प्रशिक्षित करना।
- प्रशिक्षु को माइक्रोसॉफ्ट ऑफिस, ओपेन सोर्स सॉफ्टवेयर, सायबर सेफ्टी, आईटी0 सायबर नियम की जानकारी देना।
- प्रशिक्षु को सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी(आईसीटी0) के प्रयोग में प्रशिक्षित करना।
- प्रशिक्षु को स्कूल मैनेजमेन्ट में आईसीटी0 के प्रयोग में प्रशिक्षित करना।

## प्रशिक्षण प्रक्रिया/विधियाँ

प्रशिक्षुओं के मध्य विषयवस्तु को अधिकतर प्रयोग की जा सकने वाली शिक्षण विधियों के माध्यम से रखने का प्रयास किया जाए। प्रशिक्षण शैक्षिक गतिविधियों पर आधारित हो। प्रशिक्षण के समय सीखने एवं सिखाने की प्रक्रिया में प्रशिक्षुओं को सहभागी बनाया जाए। साथ ही, उन्हें अपने शिक्षण में बच्चों का सहयोग एवं उनकी सहभागिता सुनिश्चित करनी है, यह बताया जाए। यथासम्भव आईसीटी0 के माध्यम से विषयवस्तु को प्रस्तुत करने का भी प्रयास किया जाए।

प्रशिक्षण के दौरान प्रशिक्षु का निर्धारित प्रारूप पर सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन किया जाए, जिससे कि वह इस प्रक्रिया से परिचित हो जाए तथा इसकी प्रयोग-विधि सीख सकें।

सामान्य विषय-3

## कम्प्यूटर शिक्षा

➤ I.C.T. (Information & Communication Technology)

■ **Introduction to ICT**

- Introduction & Basic Concepts
- Application & Benefits of ICT in education
- Scope of ICT in education

➤ I.C.T. in Education & Studies

■ **For Teachers**

■ Use of ICT for knowledge enhancement

- Accessing Internet
  - ◆ Using Websites (Wikipedia, open digital educational resources etc.)
  - ◆ Using Search engines
  - ◆ Communicating with Experts
- Accessing CD-ROMs & DVDs
  - ◆ Using digital content
- Accessing digital content
  - ◆ Using eBooks
  - ◆ Using eTutorials & training videos (YouTube etc.)

■ Use of ICT for education delivery

- SMART CLASSES and Digital Blackboard
- Creating & using Slide-Presentations with Projectors
- Educational A-Vs (Audio-Videos) Modules (Animated or Non-Animated or both)
- Using online elabs, eLibraries & eMuseum in classes
- Delivering Distance Education through Digital/Online services ODL mode
  - ◆ EDUSAT
  - ◆ Classes through Teleconferencing & Video conferencing
  - ◆ Prasar Bharti's education services
    - ❖ Radio Service ('Gyanvani' Radio Station)
    - ❖ Television Service (DoorDarshan's 'GyanDarshan' Chanel)
  - ◆ Query handling through Chat applications & Email
  - ◆ eTutions through Online Web-Portals
  - ◆ Moocs, DER etc.

■ **For Students**

- Use of ICT for knowledge enhancement
- Developing eContent through Internet
- Digital Project Development
- Accessing education through Radio and TV services
- Doubt clearing through online chats with experts
- Online Tests through Exam Web Portals (MeritNation.com etc.)
- eTutions

- Accessing various competitive Exams information online
  - Job Search & Enquiries through Job Portals (Naukri.com, Monster.com etc.)
- **I.C.T. in School Management**
- **Using Online services / tools**
    - Official Website for communication between school and students (and their guardians), School staff etc.
    - Online complaint portal for queries and problem eradication
  - **Using School Management Software application/ tools**
    - Digitization of School Data for transparency (Attendance, Books, Uniforms, Test Scores etc.)
    - Data mining for effective decision making
  - **ICT in office work**
    - Using Office packages for record maintenance & documentation
    - Exchange of Emails for quick & cheap communication
    - Teleconferencing & Video conferencing to save time & money
- **Experimental/Sessional Work:-**
- Create a Web page which contains information about our country, State, City or Institution. Webpage should include some pictures and a Map.
  - Visit any website which offers free greeting cards. Send any greeting card of your choice to your teachers.
  - Create a PowerPointPresentation on any type and present it using projectors
  - Practice of the theoretical aspects, in the Computer Lab of the Institution.
  - Slide Presentations- 08
    - Minimum of 7-10 slides each based on elementary school text book etc.
  - Project work
    - A ten page project work contains Text & Graphics (Per Trainee)
  - School records digitization
    - Use any office package to maintain digital records throughout the internship
    - It must contain
      1. Daily Attendance (Students & Self)
      2. Students Profile
      3. Digital Monthly summary (Create & Upload on Social Pages of School/DIET)
      4. Internship related photograph (1 in a week) (Upload on Social Pages of School/DIET)
      5. Presentation on School Analysis
  - Inspection of the computers installed in the Computer Centers of the Upper Primary Computer Labs of our District and students will also install necessary softwares.
  - Create one's personal e-mail account and send an attachment to the e-mail account of the institution (Taking full care of the e-mail etiquette)
- Practice of the theoretical aspects in the Computer Lab of the Institution.

## समाजोपयोगी उत्पादक कार्य

### उद्देश्य

- समाजोपयोगी उत्पादक कार्य के अन्तर्गत समाहित विषयों के महत्व से अवगत होकर बच्चों को उनमें दक्ष बनाने में सक्षम करना।
- समस्त विषयों के शिक्षण द्वारा बच्चों में कलात्मक प्रवृत्ति, श्रम का बोध, आत्मनिर्भरता, हस्तकौशल, अनुशासन, समय का सदुपयोग जैसे गुणों का विकास करेंगे।
- विभिन्न प्रकार के समाजोपयोगी उत्पादक कार्यों के द्वारा प्रशिक्षुओं में शैक्षिक गुणों का विकास।
- प्रशिक्षुओं में रचनात्मकता एवं सृजनात्मकता विकसित करना।
- प्रशिक्षुओं को स्थानीय संसाधनों, अनुपयोगी वस्तुओं का प्रयोग कर समाजोपयोगी वस्तुएँ तैयार करना।
- समाजोपयोगी उत्पादक कार्य के अन्तर्गत समाहित विषयों के महत्व से अवगत होकर बच्चों को उनमें दक्ष बनाने में सक्षम करना।
- सम्बन्धित विषयों के शिक्षण द्वारा बच्चों में कलात्मक प्रवृत्ति, श्रम का बोध, आत्मनिर्भरता, हस्तकौशल, अनुशासन, सेवाभाव, समय के सदुपयोग जैसे गुणों का विकास करना।
- प्रशिक्षुओं में रचनात्मकता एवं सृजनात्मकता विकसित करना।
- प्रशिक्षुओं में स्वरोजगार सम्बन्धी कौशल विकसित करना।
- प्रशिक्षुओं को स्थानीय संसाधनों, अनुपयोगी वस्तुओं का प्रयोग कर समाजोपयोगी वस्तुएँ तैयार करने के कौशल को विकसित करना।

**नोट—समाजोपयोगी उत्पादक कार्य के अन्तर्गत 'ए' गृहशिल्प एवं 'बी' कृषि व अद्यान विज्ञान की विषय सामग्री दी गयी है। प्रशिक्षु स्वेच्छा से अपनी सुविधानुसार किसी एक ग्रुप का चयन कर सकते हैं।**

### प्रशिक्षण प्रक्रिया/विधियाँ

प्रशिक्षुओं के मध्य विषयवस्तु को अधिकतर प्रयोग की जा सकने वाली शिक्षण विधियों के माध्यम से रखने का प्रयास किया जाए। प्रशिक्षण शैक्षिक गतिविधियों पर आधारित हो। प्रशिक्षण के समय सीखने एवं सिखाने की प्रक्रिया में प्रशिक्षुओं को सहभागी बनाया जाए। साथ ही, उन्हें अपने शिक्षण में बच्चों का सहयोग एवं उनकी सहभागिता सुनिश्चित करनी है, यह बताया जाए। यथासम्भव आई0सी0टी0 के माध्यम से विषयवस्तु को प्रस्तुत करने का भी प्रयास किया जाए।

प्रशिक्षण के दौरान प्रशिक्षु का निर्धारित प्रारूप पर सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन किया जाए, जिससे कि वह इस प्रक्रिया से परिचित हो जाए तथा इसकी प्रयोग—विधि सीख सकें।

**सामान्य विषय-1, 2, 3 व 4**

**समाजोपयोगी उत्पादक कार्य**

**कक्षा-शिक्षण: विषयवस्तु**

- गृहशिल्प का अर्थ, आवश्यकता, महत्व तथा क्षेत्र।
- विभिन्न प्रकार का कपड़ा व ऊन खरीदते समय ध्यान देने योग्य बातें।
- पाक कला करते समय ध्यान देने योग्य बातें एवं उनकी सावधानियाँ।
- भोजन परोसते समय ध्यान देने योग्य बातें तथा भोजन परोसना एक कला।
- सिलाई के प्रमुख टाकों का ज्ञान तथा कपड़ों पर उनका प्रयोग।
- सिलाई उपकरण एवं उनका उचित प्रयोग।
- सिलाई एवं कढ़ाई में अन्तर।
- बुनाई करते समय ध्यान देने योग्य बातें।
- विभिन्न प्रकार के वस्त्रों की धुलाई, सफाई, प्रेस सम्बन्धित ज्ञान।
- गृह प्रबन्ध से संबंधित ज्ञान।
- मिट्टी की पहचान, वर्गीकरण, कटाव, कटाव की रोकथाम।
- खाद तथा उर्वरकों का महत्व, तुलनात्मक अध्ययन, खाद तथा उर्वरकों का फसलों में प्रयोग।
- विभिन्न प्रकार की खादों यथा-गोबर की खाद, कम्पोस्ट व हरी खाद तथा जैविक खाद की तैयारी व प्रयोग।
- नाइट्रोजन, फास्फोरस व पोटैशियम उर्वरकों का अध्ययन व फसलों में प्रयोग।
- सिंचाई के लिए नालियाँ बनाना, अधिक व कम सिंचाई से होने वाली हानियाँ।
- जुताई के यंत्र यथा- देशी, मेस्टन व केयर हल आदि का तुलनात्मक अध्ययन।
- उद्यान सम्बन्धी यंत्र यथा- हैंडहो, सिकेटियर, कलम, पैबद व चाकू का उपयोग।
- उद्यान विज्ञान एवं उसका महत्व, भोजन में फल तथा सब्जियों की उपयोगिता।
- कृषि व उद्यान विषय का मूल्यांकन।

**‘ए’ – गृहशिल्प**

- गृहशिल्प विषय का अर्थ, आवश्यकता, महत्व व क्षेत्र।
- भोजन की आवश्यकता, पौष्टिक तत्व तथा उसकी प्राप्ति के स्रोत तथा इनकी कमी से होने वाले रोग।
- संतुलित आहार-कुपोषण, कारण एवं निवारण।
- पाक कला-भोजन बनाते एवं परोसते समय ध्यान देने योग्य बातें व सावधानियाँ।
- गर्भवती स्त्री एवं नवजात शिशु की देखभाल, टीकाकरण।
- सिलाई एवं बुनाई करते समय ध्यान देने योग्य बातें।
- विभिन्न प्रकार के कपड़े व ऊन खरीदते समय ध्यान देने योग्य बातें।
- सिलाई के प्रमुख उपकरण एवं प्रमुख टाकों का ज्ञान तथा कपड़ों पर उनका प्रयोग।
- विभिन्न प्रकार के वस्त्रों की धुलाई, प्रेस एवं रख-रखाव से सम्बन्धित ज्ञान।
- अनुपयोगी वस्तुओं से उपयोगी एवं कलात्मक वस्तुएँ बनाना।

**‘बी’ – कृषि**

- मिट्टी की पहचान, वर्गीकरण, कटाव, कटाव की रोकथाम।
- खाद तथा उर्वरकों का महत्व, तुलनात्मक अध्ययन, खाद तथा उर्वरकों का फसलों में प्रयोग।

- विभिन्न प्रकार की खादों यथा – गोबर की खाद, कम्पोस्ट व हरी खाद तथा जैविक खाद की तैयारी।
- नाइट्रोजन, फॉस्फोरस व पोटैश उर्वरकों का अध्ययन व फसलों में प्रयोग।
- विभिन्न प्रकार के कीटनाशकों की जानकारी एवं प्रयोग।
- सिंचाई के लिए नालियाँ बनाना, अधिक व कम सिंचाई से होने वाली हानियाँ।
- जुताई के यंत्र यथा – देशी, मेस्टन व केयर हल आदि का तुलनात्मक अध्ययन।
- उद्यान सम्बन्धी यंत्र यथा – हैंडहो, सिकेटियर, कलम, पैबंद व चाकू का उपयोग।
- उद्यान विज्ञान एवं उसका महत्व, भोजन में फल तथा सब्जियों की उपयोगिता।
- कृषि व उद्यान विषय का मूल्यांकन।

**प्रयोगात्मक कार्य/सत्रीय/प्रोजेक्ट कार्य/मॉडल:** प्रशिक्षु शिक्षकों को समाजोपयोगी उत्पादक कार्य के प्रत्येक पाठ में अन्तर्निहित ज्ञान, संकल्पना को बच्चों तक पहुँचाने के लिए प्रोजेक्ट, मॉडल, Game, Video clip, Audio clip, Experiment तैयार करने का कार्य दिया जायेगा। तैयार किये जा सकने वाले मॉडल/प्रोजेक्ट की सांकेतिक सूची सहायतार्थ निम्नवत् है। शिक्षकगण अन्य विषयों पर भी मॉडल/प्रोजेक्ट का निर्धारण कर सकते हैं।

- ड्राफ्टिंग कागज पर करना।
- वस्त्रों की ड्राफ्टिंग, कटिंग, सिलाई व कढ़ाई करना।
  - तकिए का गिलाफ।
  - झबला, बेबीफ्राक
  - कलीदार पेटीकोट।
  - सादा पायजामा
  - रुमाल (विभिन्न प्रकार के टांकों से सजान)
  - मेजपोश
  - काज बनाने का अभ्यास
  - स्वेटर, मोजा, टोपी बनाना।
- विभिन्न प्रकार की बुनाई से नमूने बनाकर एलबम बनाना।
- किसी ड्राईक्लीनर की दुकान पर जाकर पता करें कि कपड़ों की ड्राईक्लीनिंग (सूखी धुलाई) की क्या-क्या विधियाँ हैं।
- धुलाई में प्रयोग आने वाले साधनों का चित्र बनाकर एक फाइल तैयार करें।
- सब्जियों व फूलों के बीजों का चयन कर इनके पौधे की तैयारी करना।
- वृक्षों की पौध तैयार करना।
- गमलों एवं क्यारी में फूलों वाले तथा शोभाकारी पौधे लगाना।
- क्यारी तथा गमलों में लगे पौधे की निराई-गुड़ाई करना।
- गमलों में खाद्य, उर्वरक देना तथा सिंचाई करना।
- फावड़ा से खुदाई तथा खुरपा/खुरपी से निराई करना।
- आपके क्षेत्र में उगने वाले पौधों के देशी तथा वैज्ञानिक नाम लिखकर उन्हें वृक्ष, झाड़ी तथा शाक में विभाजित करें तथा दैनिक जीवन में इस पौधे का उपयोग हम किस रूप में करते हैं। चार्ट बनाकर प्रदर्शित कीजिए।
- कर्षण यन्त्रों की देशी तथा आधुनिक यन्त्रों की सूची तैयार करें एवं नाइट्रोजन, फॉस्फोरस तथा पोटैश तत्वों की उपस्थिति वाले उर्वरकों की सूची तैयार कीजिए।

### गृहशिल्प

- भोजन के पौष्टिक तत्वों का चार्ट बनाना।
- सब्जियों का सूप, सलाद, अंकुरित अनाज का नाश्ता, आम का पना तगि चार प्रकार के मीठे एवं चार प्रकार के नमकीन व्यंजन बनाना।

- कक्षा-6, 7 व 8 की गृहशिल्प पाठ्यपुस्तकों का अध्ययन एवं प्रश्न पत्र का निर्माण करना।
- निम्नलिखित वस्त्रों की ड्राफ्टिंग, कटिंग व सिलाई करना –
  1. रुमाल/मेजपोश
  2. झबला/बेबी फ्रॉक
  3. कलीदार पेटीकोट/सादा पैजामा
- स्वेटर, मोजा एवं टोपी बनाना।
- अनुपयोगी वस्तुओं से कोई दो उपयोगी व कलात्मक वस्तुएँ बनाना।

## कृषि

- सब्जियों व फूलों के बीजों का चयन कर इनके पौधे की तैयारी करना।
- वृक्षों की पौध तैयार करना।
- गमलों एवं क्यारी में फूलों वाले तथा शोभाकारी पौधे लगाना।
- क्यारी तथा गमलों में लगे पौधे की निराई-गुड़ाई करना।
- गमलों में खाद्य, उर्वरक, देना तथा सिंचाई करना।
- फावड़ा से खुदाई तथा खुरपा/खुरपी से निराई करना।
- आपके क्षेत्र में उगने वाले पौधों के देशी तथा वैज्ञानिक नाम लिखकर उन्हें वृक्ष, झाड़ी तथा शाक में विभाजित करें तथा दैनिक जीवन में इस पौधे का उपयोग हम किस रूप में करते हैं। चार्ट बनाकर प्रदर्शित कीजिए।
- कर्षण यंत्रों की सूची तैयार करें एवं नाइट्रोजन, फॉस्फोरस तथा पोटैश तत्वों की उपस्थिति वाले उर्वरकों की सूची तैयार कीजिए।

# कला

## उद्देश्य

- प्रशिक्षु को कक्षा-शिक्षण के आधारभूत सिद्धान्तों से परिचित कराना।
- प्रशिक्षु को बच्चों में कला के प्रति रुचि उत्पन्न करने का प्रशिक्षण देना।
- कला की विविध विधाओं एवं विषयवस्तु की समझ विकसित करना।
- कला शिक्षा द्वारा आनन्द की अनुभूति कराना।
- कला शिक्षा द्वारा संवेदनशीलता एवं सौन्दर्यबोध की अन्तर्दृष्टि विकसित कराना।
- कला शिक्षा को जीवनचर्या एवं अन्य विषयों के साथ समाहित करने का कौशल विकसित करना।
- प्रशिक्षुओं में कला शिक्षा के माध्यम से राष्ट्रीयता, मानवता, भावात्मक एकता तथा नैतिकता विकसित करने में प्रशिक्षित करना।
- प्रशिक्षुओं को इस प्रकार से प्रशिक्षित करना कि वह बच्चों में कला की विविध विधाओं के प्रति झिझक को समाप्त कर सकें।
- प्रशिक्षु को बच्चों में सृजनशीलता को विकसित करने की गतिविधियाँ/कार्य सिखाना।
- कला का सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन करने का प्रशिक्षण देना।

## प्रशिक्षण प्रक्रिया/विधियाँ

प्रशिक्षुओं के मध्य विषयवस्तु को अधिकतर प्रयोग की जा सकने वाली शिक्षण विधियों के माध्यम से रखने का प्रयास किया जाए। प्रशिक्षण शैक्षिक गतिविधियों पर आधारित हो। प्रशिक्षण के समय सीखने एवं सिखाने की प्रक्रिया में प्रशिक्षुओं को सहभागी बनाया जाए। साथ ही, उन्हें अपने शिक्षण में बच्चों का सहयोग एवं उनकी सहभागिता सुनिश्चित करनी है, यह बताया जाए। यथासम्भव आई०सी०टी० के माध्यम से विषयवस्तु को प्रस्तुत करने का भी प्रयास किया जाए।

प्रशिक्षण के दौरान प्रशिक्षु का निर्धारित प्रारूप पर सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन किया जाए, जिससे कि वह इस प्रक्रिया से परिचित हो जाए तथा इसकी प्रयोग-विधि सीख सकें।

सामान्य विषय-1, 2, 3 व 4

## कला

### कक्षा-शिक्षण: विषयवस्तु

- दृश्यकला
  - स्वतंत्र भाव प्रकाशन, सौन्दर्यानुभूति, रंगों का ज्ञान, रेखाओं का ज्ञान, आकार-प्रकार का ज्ञान देना।
- हस्तकला
  - अनुपयोगी वस्तुओं से उपयोगी वस्तुओं का निर्माण, कोलाज निर्माण, मिट्टी के खिलौने बनवाना।
  - चित्रकला के विभिन्न तरीकों एवं सामग्री का प्रयोग जैसे-पोस्टर, कलर, वाटर कलर, पेन्सिल एवं रबड़, पेन एवं स्याही आदि।

प्रयोगात्मक कार्य/सत्रीय/प्रोजेक्ट कार्य/मॉडल: प्रशिक्षु शिक्षकों को कला के प्रत्येक पाठ में अन्तर्निहित ज्ञान, संकल्पना को बच्चों तक पहुँचाने के लिए प्रोजेक्ट, मॉडल, Game, Video clip, Audio clip, Experiment तैयार करने का कार्य दिया जायेगा। तैयार किये जा सकने वाले मॉडल/प्रोजेक्ट की सांकेतिक सूची सहायतार्थ निम्नवत् है। शिक्षकगण अन्य विषयों पर भी मॉडल/प्रोजेक्ट का निर्धारण कर सकते हैं।

- विद्यालय तथा घर की साज-सज्जा हेतु सामग्री।
- हस्तकला के विभिन्न तरीकों-कोलाज, मिट्टी के सामान, पेपर कटिंग, पेपर फोल्ड, चूड़ियों से विभिन्न सजावटी सामान, वाल हैंगिंग, लिफाफे आदि का निर्माण।
- विभिन्न अवसरों पर चित्रकला, हस्तकला, मेंहदी, रंगोली, अल्पना आदि प्रतियोगिता करना।
- मिट्टी के खिलौने, अनुपयोगी वस्तुओं से उपयोगी वस्तुओं को बनाना।

# शारीरिक शिक्षा एवं स्वास्थ्य

## उद्देश्य

- प्रशिक्षु को स्वास्थ्य शिक्षा एवं शारीरिक शिक्षा के महत्व से अवगत कराना।
- प्रशिक्षु को विभिन्न खेल एवं उनके नियमों की जानकारी देना।
- प्रशिक्षु को इस प्रकार से प्रशिक्षित करना कि वह बच्चों में विभिन्न खेलों के प्रति झिझक को समाप्त कर सके।
- विभिन्न खेलों में बच्चों के सतत् मूल्यांकन करने में सक्षम करना।
- खेलकूद के माध्यम से स्वास्थ्य, अनुशासन, स्वस्थ प्रतिस्पर्धा, नैतिक एवं मानवीय मूल्यों का विकास करना।

## प्रशिक्षण प्रक्रिया/विधियाँ

प्रशिक्षुओं के मध्य विषयवस्तु को अधिकतर प्रयोग की जा सकने वाली शिक्षण विधियों के माध्यम से रखने का प्रयास किया जाए। प्रशिक्षण शैक्षिक गतिविधियों पर आधारित हो। प्रशिक्षण के समय सीखने एवं सिखाने की प्रक्रिया में प्रशिक्षुओं को सहभागी बनाया जाए। साथ ही, उन्हें अपने शिक्षण में बच्चों का सहयोग एवं उनकी सहभागिता सुनिश्चित करनी है, यह बताया जाए। यथासम्भव आई0सी0टी0 के माध्यम से विषयवस्तु को प्रस्तुत करने का भी प्रयास किया जाए।

प्रशिक्षण के दौरान प्रशिक्षु का निर्धारित प्रारूप पर सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन किया जाए, जिससे कि वह इस प्रक्रिया से परिचित हो जाए तथा इसकी प्रयोग-विधि सीख सकें।

सामान्य विषय-1, 2, 3 व 4

## शारीरिक शिक्षा एवं स्वास्थ्य

कक्षा-शिक्षण: विषयवस्तु

### स्वास्थ्य शिक्षा

- स्वास्थ्य शिक्षा का अर्थ, क्षेत्र एवं उद्देश्य, स्वास्थ्य को प्रभावित करने वाले कारक, बच्चों की स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याएँ, स्वास्थ्य केन्द्रों की भूमिका, बच्चों का स्वास्थ्य परीक्षण और उसका अनुश्रवण, संक्रामक रोग एवं टीकाकरण, पोलियो एवं एड्स जैसी घातक बीमारियों के बचाव हेतु जागरूकता सम्बन्धी कार्यक्रम।
- व्यक्तिगत स्वच्छता एवं शिक्षकों द्वारा नियमित निरीक्षण।
- विद्यालयीय स्वच्छता।
- प्राथमिक चिकित्सा एवं विभिन्न दुर्घटनाओं में प्राथमिक चिकित्सा का महत्व।
- रेडक्रॉस: रेडक्रॉस का परिचय एवं उपयोगिता

### शारीरिक शिक्षा

- खेल, व्यायाम तथा योग
- शरीर को वॉर्मअप करने वाली क्रियाएं यथा-इधर उधर दौड़ना।
- हाथ-पैर, धड़ का व्यायाम। कौशल के अभ्यास हेतु लम्बी कूद, ऊँची कूद, जिमनास्टिक, मार्चिंग, गेंद एवं रस्सी कूद से सम्बन्धित क्रियाएं।
- विभिन्न प्रकार की दौड़: 10 मी०, 200 मी०, 400मी०, 600मी०, 800मी० की दौड़, रिले दौड़, बाधा दौड़।
- ध्यान एवं विभिन्न प्रकार के योगसान एवं प्राणायाम यथा-भस्त्रिका, कपालभाति, अनुलोम-विलोम, भ्रामरी और उद्गीथ तथा उनके लाभ। लेजिम एवं डम्बल द्वारा किये जाने वाले व्यायाम।
- विभिन्न प्रकार के थ्रो: गोला फेंक, चक्का फेंक।
- खेल:
  - कबड्डी, खो-खो, फुटबाल, हॉकी, बॉलीवाल, बैडमिंटन।
  - अमरूद दौड़, छुआ छुआवल, एक टांग पर दौड़, चूहा-बिल्ली, गेंद-तड़ी, छाया-पकड़।
- स्काउटिंग/गाइडिंग
  - स्काउट मास्टर/गाइड कैप्टन बनने सम्बन्धित दक्षताओं हेतु प्रथम एवं द्वितीय सोपान परीक्षा।
  - कब/बुलबुल, बालवीर/वीरबाला प्रवेश एवं विकास क्रम।
  - कब/बुलबुल, प्रथम चरण-कोमल पंख।
  - कब/बुलबुल, द्वितीय चरण-रजत पंख।
  - कब/बुलबुल, तृतीय चरण-स्वर्ण पंख।
  - कब/बुलबुल, चतुर्थ चरण-हीरक पंख।

प्रयोगात्मक कार्य/सत्रीय/प्रोजेक्ट कार्य/मॉडल: प्रशिक्षु शिक्षकों को शारीरिक शिक्षा एवं स्वास्थ्य के प्रत्येक पाठ में अन्तर्निहित ज्ञान, संकल्पना को बच्चों तक पहुँचाने के लिए प्रोजेक्ट, मॉडल, Game, Video clip, Audio clip, Experiment तैयार करने का कार्य दिया जायेगा। तैयार किये जा

सकने वाले मॉडल/प्रोजेक्ट की सांकेतिक सूची सहायतार्थ निम्नवत् है। शिक्षकगण अन्य विषयों पर भी मॉडल/प्रोजेक्ट का निर्धारण कर सकते हैं।

- प्रार्थना स्थल पर कराने के लिए नित्य सामुदायिक/राष्ट्रभक्ति गीतों का संकलन तैयार करना।
- शारीरिक व्यायाम एवं योगासनों की तैयारी एवं प्रदर्शन कराना तथा अभिलेखीकरण करना।
- प्रशिक्षु शिक्षक विभिन्न प्रकार के खेलों में से एक खेल का चयन प्रति सेमेस्टर करेगा तथा उस पर अपनी आख्या प्रस्तुत करेगा।
- सार्वजनिक स्थानों यथा—रेलवे स्टेशन, बस स्टैण्ड, मेलों में श्रमदान (समाज सेवा का कार्य) करना जैसे पानी पिलाना व शांति व्यवस्था बनाये रखना।
- वृक्षारोपण करना, दीवारों पर सद्वाक्य लिखना तथा जन जागरूकता के कार्यक्रमों का आयोजन करना।
- विभिन्न प्रकार के योगासनों पर चार्ट/मॉडल तैयार करना।
- विभिन्न प्रकार की चिकित्सा पद्धतियों पर मॉडल/चार्ट आदि तैयार करना।

# संगीत

## उद्देश्य

- प्रशिक्षु को लय, गति, यति, आरोह—अवरोह का ज्ञान कराना।
- प्रशिक्षु को बच्चों में संगीत के प्रति रुचि उत्पन्न करने का प्रशिक्षण देना।
- संगीत की विविध विधाओं एवं विषयवस्तु की समझ विकसित करना।
- संगीत के माध्यम से आनन्द की अनुभूति कराना।
- संगीत शिक्षा द्वारा संवेदनशीलता की अन्तर्दृष्टि विकसित कराना।
- प्रशिक्षुओं में संगीत शिक्षा के माध्यम से राष्ट्रीयता, मानवता, भावात्मक एकता तथा नैतिकता विकसित करने में प्रशिक्षित करना।
- प्रशिक्षुओं को इस प्रकार से प्रशिक्षित करना कि वह बच्चों में संगीत की विविध विधाओं के प्रति झिझक को समाप्त कर सकें।
- प्रशिक्षु को बच्चों में गीत/संगीत को विकसित करने की गतिविधियाँ/क्रिया—कलाप सिखाना।
- संगीत का सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन करने का प्रशिक्षण देना।

## प्रशिक्षण प्रक्रिया/विधियाँ

प्रशिक्षुओं के मध्य विषयवस्तु को अधिकतर प्रयोग की जा सकने वाली शिक्षण विधियों के माध्यम से रखने का प्रयास किया जाए। प्रशिक्षण शैक्षिक गतिविधियों पर आधारित हो। प्रशिक्षण के समय सीखने एवं सिखाने की प्रक्रिया में प्रशिक्षुओं को सहभागी बनाया जाए। साथ ही, उन्हें अपने शिक्षण में बच्चों का सहयोग एवं उनकी सहभागिता सुनिश्चित करनी है, यह बताया जाए। यथासम्भव आई0सी0टी0 के माध्यम से विषयवस्तु को प्रस्तुत करने का भी प्रयास किया जाए।

प्रशिक्षण के दौरान प्रशिक्षु का निर्धारित प्रारूप पर सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन किया जाए, जिससे कि वह इस प्रक्रिया से परिचित हो जाए तथा इसकी प्रयोग—विधि सीख सकें।

सामान्य विषय-1, 2, 3 व 4

## संगीत

### कक्षा-शिक्षण: विषयवस्तु

- संगीत के परिभाषिक शब्द-स्वर, स्वरों के प्रकार, नाद, आरोह, अवरोह, पकड़, आलाप, लय, लय के प्रकार आदि का ज्ञान।
- संगीत गायन में सहायक तालों का ज्ञान यथा – तीनताल, झपताल, रूपकताल, कहरवा ताल, दादरा, एकताल व चारताल का परिचयात्मक ज्ञान।
- संगीत-वन्दना, भजन, स्थानीय लोकगीत, ऋतुओं एवं मौसम सम्बन्धी गीत, राष्ट्रीय एकता (देशगान, राष्ट्रगान) सम्बन्धी गीतों का ज्ञान।
- भारतीय संगीतज्ञों का जीवन परिचय।
- त्य/नाटक-लोकनृत्य, स्थानीय नृत्य, भावनृत्य, समसामयिक समस्याओं से, पाठ्यवस्तु से एवं देशभक्ति से सम्बन्धित नाटक करवाना।

**प्रयोगात्मक कार्य/सत्रीय/प्रोजेक्ट कार्य/मॉडल:** प्रशिक्षु शिक्षकों को संगीत के प्रत्येक पाठ में अन्तर्निहित ज्ञान, संकल्पना को बच्चों तक पहुँचाने के लिए प्रोजेक्ट, मॉडल, Game, Video clip, Audio clip, Experiment तैयार करने का कार्य दिया जायेगा। तैयार किये जा सकने वाले मॉडल/प्रोजेक्ट की सांकेतिक सूची सहायतार्थ निम्नवत् है। शिक्षकगण अन्य विषयों पर भी मॉडल/प्रोजेक्ट का निर्धारण कर सकते हैं।

- विभिन्न अवसरों पर गाये जाने वाले गीतों का संकलन करना।
- विभिन्न सामाजिक तथा सांस्कृतिक अवसरों पर गाये जाने वाले गीतों का संकलन।
- विभिन्न प्रकार के नृत्यों का एलबम तैयार करना।
- विभिन्न प्रकार के लोकनृत्यों पर चार्ट/मॉडल/वीडियो क्लिप तैयार करना।
- विभिन्न प्रकार के लोकगीतों पर चार्ट/मॉडल/वीडियो/ऑडियो क्लिप तैयार करना।
- विभिन्न प्रकार के वाद्य यंत्रों का एलबम तैयार करना।